(मूल्य बोध एवं दृष्टिकोण)

1-मूल्यों का बोध व्यक्ति का व्यवहार नियंत्रित करता है।

2-अपने दायित्व का बोध कराता है।

3- मूल्यों का बोध व्यक्ति के दृष्टिकोण को भी प्रभा वत करता है।

◆◆मूल्य एवं दृष्टिकोण निर्माण के कारक◆◆

◆परिवार

◆विद्यालय

◆समाज

◆◆दृष्टिकोण क्या है◆◆

कसी घटना अथवा कार्य के प्रति व्यक्ति की सोच एवं अनुभूति।

◆"व्यक्तित्व निर्माण में सोच,व्यवहार और दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव पड़ता है"।◆

◆◆दृष्टिकोण के घटक◆◆

◆भावनात्मक

◆व्यवहारात्मक

◆संज्ञानात्मक

◆◆दृष्टिकोण निर्माण के आधार◆◆

◆पारिवारिक

◆सामाजिक

◆आर्थिक

दृष्टिकोण दो प्रकार का होता है-

1- सकारात्मक दृष्टिकोण

2- नकारात्मक दृष्टिकोण

●सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ है किसी भी स्थिति में किसी घटना या विषय में कुछ अच्छा ढूंढ लेना,घटना के प्रति सदा आशावादी होकर प्रयासरत रहना।

●नकारात्मक दृष्टिकोण से आशय है कि किसी भी घटना या विषय का सदा ही बुरा पक्ष देखना।कोई घटना हो या कोई कार्य उसमें निराशा का भाव उत्पन्न करना, अविश्वास करना।

◆◆मूल्य बोध और दृष्टिकोण में अंतर◆◆

1-परिवार,दोस्त,संस्कृति,धर्म और सामाजिक-संपर्क सीधे मूल्य प्रभा वत करते हैं।

जब क

दृष्टिकोण सीधे मूल्य से प्रभा वत होता है।

2- मूल्य नैतिक गुणों पर नि र्मत होते हैं।

जब क

दृष्टिकोण व भन्न मुद्दों के संबंध में होता है।

3- मूल्य कसी व्यक्ति के दृष्टिकोण या कार्यों को निर्दे शत या प्रेरित करते हैं।

जब क

दृष्टिकोण व्यक्ति की अपनी स्वतंत्र सोच होती है।

4- मूल्य अमूर्त होते हैं और मूल्य सीखे जाते हैं।

जब क

दृष्टिकोण व्यक्ति की पसंद के अनुसार व्यक्तिगत प्र क्रया होती है।

5- मूल्य सकारात्मक होते हैं।

जब क

दृष्टिकोण सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों हो सकता है।

◆◆मूल्य और दृष्टिकोण में संबंध◆◆

1-मूल्य कसी के वश्वास और मार्गदर्शक के मूल सद्धांतों के रूप में खड़े होते हैं।

2- तदनुसार कसी व्यक्ति के नैतिक मूल्यों के आधार दृष्टिकोण नि र्मत होता है।

3- मूल्य एवं दृष्टिकोण दोनों एक व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्र क्रया को प्रभा वत करते हैं।

4- मूल्य बोध और दृष्टिकोण दोनों एक व्यक्ति के व भन्न सामाजिक बातचीत और सामाजिक अनुभवों के साथ बदलने के अधीन होते हैं।

◆◆:सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे प्राप्त किया जाए:◆◆

1- स्वयं पर वश्वास रखना।

2- जीवन में अच्छी घटनाओं का संदर्भ लेना।

3- जीवन में सदा आशावादी रहना।

4- छोटी बड़ी उपलब्धि पर प्रसन्न होना तथा दूसरों से साझा करना।

5- अच्छे लोगों की संगत में रहना।

6- अच्छे साहित्य कहानियां एवं संदर्भों को पढ़ना।

7- मैं कर सकती/सकता हूँ तथा मैं अवश्य करूँगी/करूँगा यह सोच रखना।

8- नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्तियों से हमेशा दूर रहना।

◆◆बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु कक्षा-कक्ष में कराई जाने वाली गतिविधियाँ◆◆

1-सकारात्मक दृष्टिकोण से सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की उपलब्धियां बताना।

2- प्रेरणापूर्ण वी डयो दिखाना।

3- बच्चों को ऐसे अनुभव सुनाना और उनसे सुनना जिसमें भी कसी कठिन कार्य को करने में अपनी सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण सफल हुए हों।

4- भाग मल्खा भाग मैरीकॉम जैसी सकारात्मक ऊर्जा भरने वाली फल्में दिखाना।

5- दृष्टांत वह कहानियों द्वारा बच्चों में सकारात्मक सोच वक सत करना।

6- बच्चे अपनी असफलता पर भी आसानी से अपने घरवालों या शक्षक से बात कर सकें इस हेतु उन्हें प्रेरित करना।

◆ " हमेशा अपने विचार सकारात्मक रखें क्योंकि जब व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है तो प्रयोग किए गए शब्द विचारों के आधार पर होते हैं।हमें अपने शब्दों को हमेशा सकारात्मक रखना चाहिए क्योंकि उसी के अनुसार हमारी आदतों का विकास होता है हम जिस प्रकार की आदतों के अनुरूप कार्य करते हैं उन्हीं के अनुसार हमारे जीवन मूल्य एवं व्यक्तित्व निर्मित होते हैं और इन्हीं के आधार पर हम जीवन में सफल या असफल होते हैं। ◆....................◆महात्मा गांधी◆

अनीता शुक्ला
वाराणसी